परिधान और पदत्राण (जूते) : क्या भारत निम्न कौशल विनिर्माण पर पुनः अधिकार कर सकता है?

07
अध्याय

''औद्योगिक क्रांति के बाद से कोई भी देश औद्योगिक शक्ति बने बिना बड़ी अर्थव्यवस्था नहीं बन पाया है''

- ली कुआन यू

रोजगार सृजन की चुनौतियों का सामना करने के लिए श्रमसघन क्षेत्रों की ओर ध्यान देना ही होगा। परिधान एवं पदत्राण उद्योग नीति-निर्माताओं का ध्यान पाने की बहुतसी वांछनीय विशेषताओं से परिपूर्ण हैं : इनमें रोजगार बहुत होते हैं, वह भी विशेषकर महिलाओं के लिए और साथ ही इन दोनों उद्योगों के लिए निर्यात बाजारों में बहुत संवृद्धिशील संभावनाएं विद्यमान हैं। श्रम लागतों में वृद्धि का परिणाम है कि चीन इन उद्योगों में अपने वर्चस्व से धीरे-धीरे परे हट रहा है और भारत के लिए कुछ सुअवसर पैदा हो रहे हैं। यदि इन अवसरों को बंगलादेश और वियतनाम जैसे प्रतिद्वन्द्वियों के हाथों सौंपना नहीं है तो हमें श्रम नियमों की जकड़ कुछ ढ़ीली करनी होगी। यूरोपीय संघ और ब्रिटेन जैसे बड़े व्यापार भागीदारों के साथ कुछ मुक्त व्यापार अनुबंधों पर सौदेबाजी करनी होगी और ध्यान रखना होगा कि जीएसटी के अंतर्गत वर्तमान कर नीति के उन प्रावधानों को तर्क संगत बनाया जाएगा जो गत्यात्मक उद्योगों के विरूद्ध कार्य कर सकते हैं।

I. विषय प्रवेश

7.1 आज अधिक श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसरों का सृजन भारत के लिए एक चुनौति बन गया है। नीतिगत प्रयासों का एक अंग तीव्र आर्थिक संवृद्धि की रचना करना है, निवेश संभव बनाने वाले वातावरण को सुनिश्चित करना दूसरा तथा लक्षित कदम उठाना तीसरा अंग है। तीसरे अंग से भारत की ऐसे रोजगार के अवसरों के सृजन की आवश्यकता है जो औपचारिक एवं उत्पादक हो, जिनमें निवेश पर व्यय के अनुपात में अधिक लोगों को काम प्रदान करने की संभावना भी अच्छी तरह से भरी हो। साथ ही उन रोजगार सृजन क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं के साथ-साथ संवृद्धि तथा निर्यात संवर्धन की क्षमता भी होनी चाहिए। परिधान और चर्म एवं पदत्राण उद्यमों में हमारी उपर्युक्त सभी या अधिकांश कसौटियों का अनुपालन करने की क्षमता है। अत: इन्हीं पर लक्ष्य साधने की आवश्यकता है। इसी बात को पहचानकर सरकार ने परिधान उत्पादन एवं निर्यात को संप्रेरणाएं प्रदान करने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण कदमों की घोषणाएं (भारत सरकार, जून, 2016) की हैं। चर्म उद्योग के विषय में ऐसी ही नीतिगत पहलों पर अभी गहन विचार मंथन चल रहा है।

II. परिधान और पदत्राण ही क्यों?

7.2 महायुद्धोपरांत पूर्वी एशिया का अनुभव बताता है कि लगभग सभी सकल आर्थिक संवृद्धि यात्राएं परिधान और पदत्राण के निर्यात में तीव्र वृद्धि के साथ प्रारंभ हुई है (रेखाचित्र-1, तालिका 3)।

7.3 सफल रही पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं (जहां संवृद्धि उत्कर्ष में जीडीपी वृद्धि की दरें 7-10 प्रतिशत रही हैं) में इन दो उद्योगों के निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। औसत परिधान निर्यात संवृद्धि दर 20 प्रतिशत वार्षिक रही, कुछ मामलों में तो यह 50 प्रतिशत के निकट थी। चर्म पदार्थों और जूतों के निर्यात की औसत वृद्धि दर भी 25 प्रतिशत से अधिक रही है।

रेखाचित्र 1 : उत्कर्ष प्रारंभ होने के बाद परिधान, चर्म एवं पदत्राण निर्यात

रेखाचित्र 1क : परिधान निर्यात प्रारंभिक वर्ष = 100

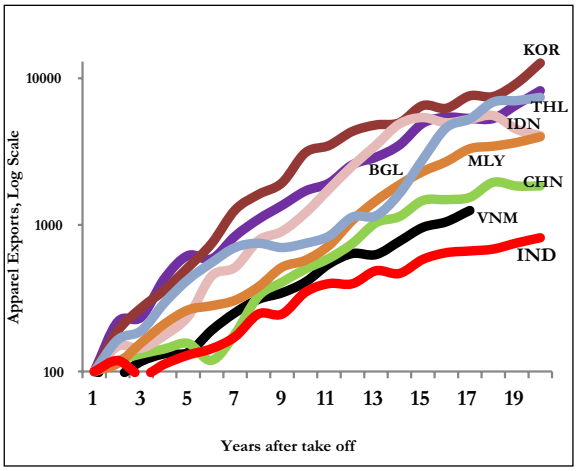

रेखाचित्र 1ख : चर्म एवं पदत्राण निर्यात प्रारंभिक वर्ष = 100

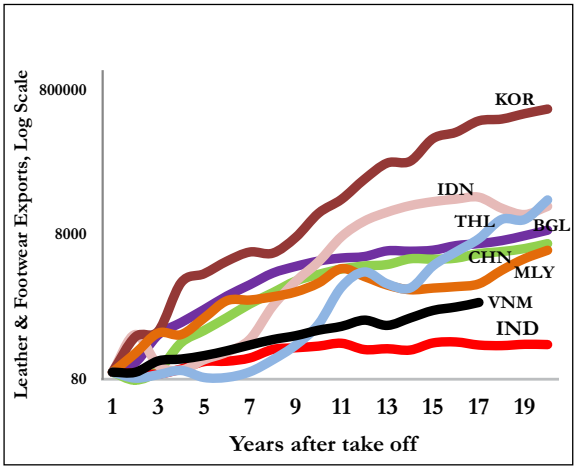

स्रोत : Johnson, Ostry, Subramanian 2010, और World Bank Database

तालिका 1 : उत्कर्ष प्रारंभ के बाद परिधान, चर्म एवं पदत्राण निर्यात

देश	उत्कर्ष आरंभ वर्ष	उत्कर्ष पश्चात, 20 वर्षों में वार्षिक औसत निर्यात वृद्धि (%) परिधान	उत्कर्ष पश्चात, 20 वर्षों में वार्षिक औसत निर्यात वृद्धि (%) चर्म एवं पदत्राण	वार्षिक औसत आर्थिक संवृद्धि 20 वर्ष तक उत्कर्ष पश्चात
कोरिया	1962	30.4	69.9	9.0
बांग्लादेश	1985	27.9	29.8	5.2
थाइलैंड	1960	53.8	44.1	7.5
इंडोनेशिया	1967	65.8	48.6	7.0
मलेशिया	1970	33.4	27.5	6.9
चीन	1978	18.6	27.7	9.8
वियतनाम	1985	17.8	16.1	6.6
भारत	1980	12.7	5.4	5.6

***स्रोत :* World Bank Database.**

रोजगार, विशेषकर महिलाओं के लिए

संवृद्धि के प्रारंभिक उत्थान काल में भारत का निष्पादन पूर्वी एशियाई स्पर्धियों की अपेक्षा फीका रहा है, यह फीकापन भी चर्म उद्योग में विशेषकर दिखाई दिया है।

7.4 परिधान और चर्म उद्योग महिलाओं के लिए तो रोजगार के अवसर विशेष रूप से बहुत बड़े स्तर पर सृजित करते हैं। तालिका 2 में रोजगार प्रति निवेश इकाई के रूप में श्रम प्रधानता की तुलना प्रमुख विनिर्माण क्षेत्रों में स्त्रीश्रम सघनता के साथ की गई है। आंकड़े स्पष्ट कर रहे हैं कि परिधान उद्योग सबसे अधिक श्रम सघन है और दूसरे क्रम पर जूता उद्योग की बारी आती है। परिधानों की श्रम सघनता वाहन उद्योग से 80 गुनी है तो यह इस्पात उद्योग की तुलना में 240 गुना अधिक रोजगार प्रदान करता है। चर्म उद्योग के लिए ये तुलनीय अंक क्रमश: 33 और 100 हैं। ध्यान रहे, ये विशेषता परिधान उद्योग की है, वस्त्र उद्योग की नहीं, साथ ही चर्म पदार्थों और जूता उद्योग के लिए आंकलन किया गया है, चमड़ा उतारने और उसे साफ करने के लिए

तालिका 2 : चुनींदा उद्योगों में रोजगार-निवेश अनुपात

क्षेत्रक	निवेश (रू. करोड़)	रोजगार (लाख में)	प्रति एक लाख निवेश पर रोजगार	स्त्री रोजगार (लाख)	प्रति एक लाख निवेश पर स्त्री रोजगार
Apparels (NIC 14))	3156	75.4	23.9	25.9	8.2
Leather & Footwear (NIC 15)	1624.5	11.6	7.1	5.5	3.4
Of which					
Tanning and Dressing of Leather & Fur (NIC 1511)	470.8	2.2	4.6	1.1	2.4
Leather Goods (NIC 1512)	218.3	2.2	9.9	0.8	3.9
Footwear (NIC 1520)	935.4	7.2	7.7	3.6	3.8
Textiles (NIC 13)	17814.7	71.3	4	22.5	1.3
Food Processing (NIC 10)	21119	50.2	2.4	27.9	1.3
Autos (NIC 2910 & 2930)	29647.6	7.6	0.3	3	0.1
Steel (NIC 2410 & 2431)	70528.3	7.8	0.1	3.7	0.05

***स्रोत:* ASI 2012-2013, NSSO 68th round**

टिप्पणी: *Investment is Gross Fixed Capital Formation

नहीं। विश्व बैंक के रोजगार लोचशीलता के आंकड़ों का प्रयोग करते हुए हमने अनुमान लगाया है कि निर्यात में तीव्र वृद्धि अकेले 5,00,000 रोजगार के नए अवसर प्रतिवर्ष सृजित कर सकती है।

7.5 महिलाओं के लिए विशेष रूप से अधिक रोजगार से सृजन का अर्थ है ये क्षेत्र एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनेंगे। परिधान उद्योगों में नारी के कार्य करने से उसकी वित्तीय निर्णय प्रक्रिया में बृहतर भागीदारी में सुधार होगा। यह सुधार एक अन्य रूप भी धारण करेगा, घरेलू काम काज में पुरूष वर्ग योगदान देने लगेगा। बंगलादेश में परिधान उद्योग के विकास के साथ-साथ नारी शिक्षा, नारी की श्रमशक्ति में भागीदारी में वृद्धि तथा गर्भाधान दरों में गिरावट के प्रमाण मिले हैं।

एक ऐतिहासिक सुअवसर : चीन स्थान खाली कर रहा है, किन्तु इसे भारत नही अन्य देश भर रहे हैं।

7.6 चीन में मजदूरी दरों में वृद्धि के कारण वह परिधान, चर्म एवं पदत्राण उत्पादों के बाजार से बाहर होता जा रहा है (रेखाचित्र 2-4)।

7.7 तालिका-3 में चीन, पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं और भारत के बड़े प्रांतों में मजदूरी दरें दिखाई गई है। भारत के अधिकांश प्रांतों में मजदूरी दरें चीन से काफी कम होने के कारण वह चीन की स्पर्धा क्षमता में निरंतर ह्रास का लाभ उठाने की स्थिति में रहा है। किन्तु यह नहीं हो पा रहा, उतना तो नहीं जितना होना चाहिए था। परिधानों में चीन द्वारा खाली स्थान को वियतनाम और बंगलादेश बड़ी तेजी से भर रहे हैं; तो इंडोनेशिया और वियतनाम चर्म एवं जूता उत्पादों के बाजार पर अधिकार करते जा रहे हैं (रेखाचित्र 2ख, 3ख और 4)। वस्तुत: भारतीय परिधान और चर्म उत्पादक फर्में अपना करोबार बंगलादेश, वियतनाम, म्यांमार और यहां तक कि इथोपिया को भी पुन: स्थापित कर रही हैं। सुयोग द्वार बंद होते जा रहे हैं। यदि भारत को इन उद्योगों में स्पर्धाक्षमता प्राप्त करनी है तो इसे तुरंत काम करना होगा। यही करना आज अत्यावश्यक हो रहा है।

रेखाचित्र 2 : वैश्विक परिधान निर्यात में (%) अंश (HS Code 61 और 62)

रेखाचित्र 2क : विश्व परिधान निर्यात में अंश

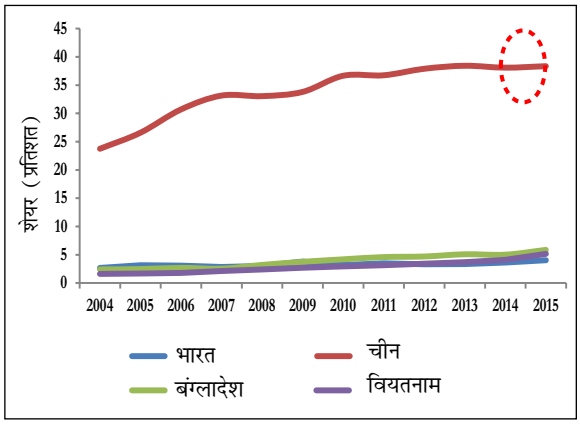

रेखाचित्र 2ख : विश्व परिधान निर्यात में अंश

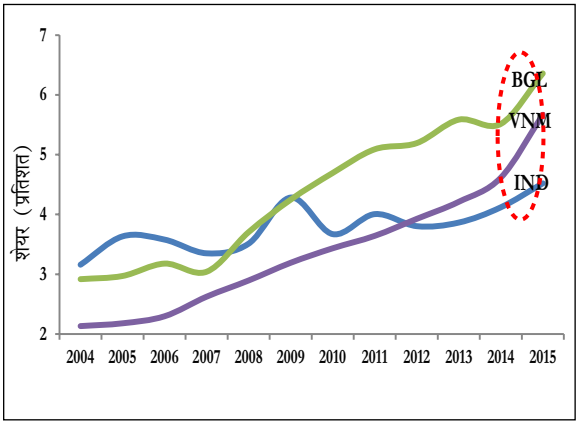

रेखाचित्र 3 : विश्व पदत्राण निर्यात में अंश (प्रतिशत) (HS Code 64)

रेखाचित्र 3क : विश्व पदत्राण निर्यात में अंश

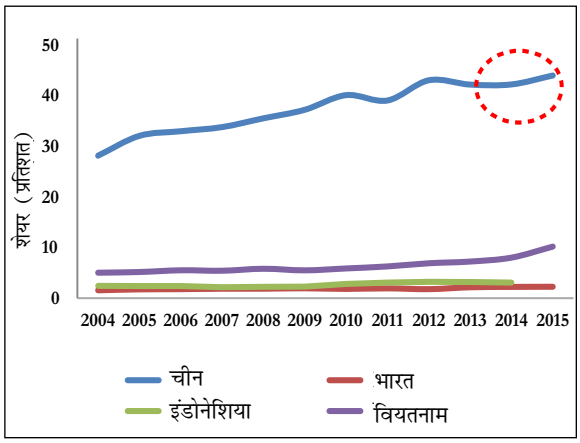

रेखाचित्र 3ख : विश्व पदत्राण निर्यात में अंश

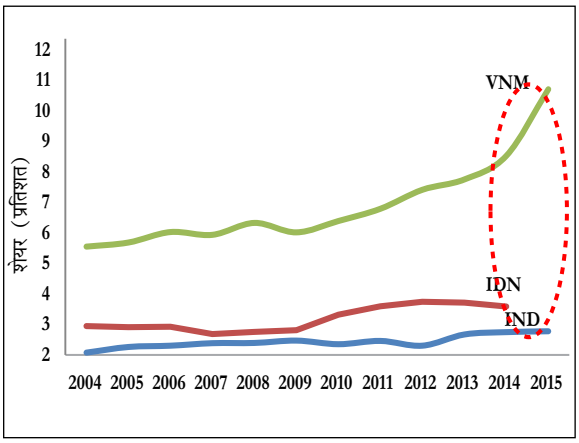

रेखाचित्र 4 : विश्व चर्म निर्यातों में अेश (प्रतिशत) (HS Code 42)

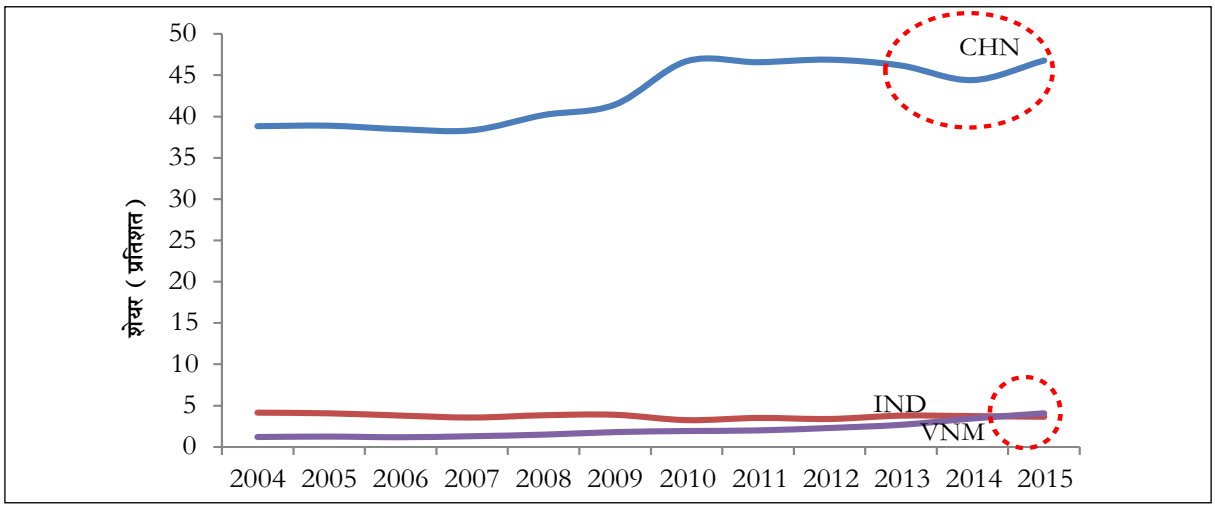

स्रोत : World Bank Database.

तालिका 3 : अर्द्ध कुशल श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी

	वर्ष	मासिक मजदूरी (अमेरिकी डॉलर)
आन्ध्र प्रदेश	2016	81
बिहार	2016	84
ओडिशा	2016	86
झारखण्ड	2016	90
तमिलनाडु	2016	93
उत्तर प्रदेश	2016	95
कर्नाटक	2016	105
पश्चिम बंगाल	2016	109
गुजरात	2016	114
मध्य प्रदेश	2016	115
महाराष्ट्र	2016	118
हरियाणा	2016	119
बंगलादेश	2013	80-120
वियतनाम	2015	180- 250
चीन	2013	250 - 300
इंडोनेशिया	2013	120 - 150

स्रोत: **ILD, राज्य श्रम कार्यालय**

III. चुनौतियां

7.8 स्पष्टत: अभी भारत के पास सस्ती और प्रचुर श्रम शक्ति के रूप में संभावित तुलनात्मक लाभ है। किन्तु कुछ अन्य कारक उन लाभों को निरस्त कर उसे अपने स्पर्धियों की अपेक्षा कम स्पर्धाक्षम बना देते हैं।

7.9 परिधान एवं चर्म क्षेत्रों को एक जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संभार तंत्र, श्रम नियम और कर तथा सीमा शुल्क नीतियां स्पर्धी देशों की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार परिवेश से व्युत्पन्न कठिनाइयां मिलकर इन उद्यमों की स्पर्धा क्षमता को क्षीण कर रही हैं। साथ ही चर्म एवं पदत्राण उद्योगों के संदर्भ में प्रचुर रूप में उपलब्ध पशुधन की तुलनात्मक लाभ संभावना को व्यवहारिक बनाने में अनेक नीतियां बाधक हो रही हैं। हम आगे इन पर विस्तार से चर्चा कर रहे हैं।

(क) सांझी चुनौतियां

7.10 संभार तंत्र के पटल पर भारत अनेक तरीकों से अपने स्पर्धियों से पिछड़ जाता है। तालिका-4 दिखा रही है कि यहां फैक्ट्रियों से माल को गन्तव्य स्थान पर पहुँचाने में लगने वाली लागत और समय बहुत अधिक हैं। यही नहीं, बहुत कम बड़ी क्षमता वाले कंटेनर पोत भारतीय बंदरगाहों तक आते हैं। इसीलिए हमारे निर्यातकों को अपना माल कोलंबो के रास्ते भेजना पड़ता है। इससे लागतों में वृद्धि होती है और उत्पादनकर्ताओं के हाथ बंध जाते हैं।

श्रम नियम

7.11 भारत के तुलनात्मक लाभ का मुख्य स्रोत श्रम लागत है किन्तु वह भी भारत के पक्ष में काम करता नहीं प्रतीत होता। समस्या तो जानी पहचानी हैं : न्यूनतम ओवर टाईम भुगतान की दरें, और बड़े वैधानिक योगदान (भविष्य निधि, पेंशन फंड आदि) तो छोटी फर्मों में काम करने वाले निम्न मजदूरी श्रमिकों पर लगने वाले करों का रूप धारण कर जाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी निर्वर्त्य मजदूरी आय 45 प्रतिशत तक कम रह जाती है

तालिका 4 : संभार तंत्र की लागतें

देश	संभार लागत + प्रति किलोमीटर, सड़क परिवहन	बंदरगाह एवं जहाजी ढुलाई में लगे दिन	
		सीमाशुल्क/बंदरगाह अनुपालन	बन्दरगाह से गंतव्य स्थान अमेरिकी पूर्वी तट पर
भारत	7.0	6.0	21-0 (JNPT)_ 28-0 (Chennai/ Tuticorin)
चीन	2.4-2.5	1.5	14.0
बंगलादेश	3.9	10.0	21.0
वियतनाम	7.0	6.0	14.0
श्रीलंका	3.0	3.0	23.0

स्रोत: **CLE और एवं परिधान उद्योग स्रोत**

(इस विषय में आर्थिक समीक्षा, 2015-16 के प्रथम खंड के अध्याय 10 में सप्रमाण विवरण दिया गया था)। कई स्थानों पर अंशकालिक कार्य में नम्यता के अभाव और उच्च न्यूनतम मजदूरी भी बाधक सिद्ध हो रहे हैं। ओवर टाइम मजदूरी को लेकर न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 के प्रावधान बहुत ही सख्त है, यहां श्रमिक की सामान्य मजदूरी दर से दोगुना भुगतान की व्यवस्था है।

7.12 श्रम बाजार की समस्याओं के कारण ही भारत के परिधान एवं चर्म उत्पाद फर्मों के आकार चीन, बंगलादेश और वियतनाम की फर्मों से समक्ष बहुत छोटे रह जाते हैं। भारत में तो 78 प्रतिशत फर्मों में 50 से कम कर्मी कार्य कर रहे हैं, मात्र 10 प्रतिशत में 500 से अधिक कर्मी हैं। चीन में ये अनुपात क्रमश: 15 प्रतिशत और 28 प्रतिशत हैं।

कर एवं सीमाशुल्क नीतियां

7.13 परिधान और पदत्राण, दोनों के विषय में कर और सीमा शुल्क नीतियां ऐसी विकृतियों से भरी हैं कि भारत निर्यात स्पर्धा क्षमता नहीं पा सकता। परिधान क्षेत्र में दो प्रकार की नीतियां हैं जो मानव निर्मित कपड़े में स्पर्धा की हानि करती है और सूती कपड़े पर आधारित निर्यात को प्रोत्साहन देती हैं। यह एक गंभीर समस्या है, विश्व भर में मांग अब मानव निर्मित रेशे से बने परिधान की ओर उन्मुख है, सूती वस्त्रों के निर्यात पर इसका दुष्प्रभाव ही पड़ा है (रेखाचित्र 5)।

7.14 दूसरी ओर सूत और रेशे पर लगे उच्च सीमा शुल्कों के कारण वस्त्र निर्माण की लागत अधिक हो जाती है। भारत मानव निर्मित रेशे पर 10 प्रतिशत तथा सूत-कपास पर 6 प्रतिशत आयात कर लगता है। किसी सीमा तक तो इन शुल्कों का निर्यात पर प्रभाव नहीं होना चाहिए क्योंकि निर्यातकों को आदान शुल्क लौटा दिए जाते हैं। किन्तु यह शुल्क वापसी आयातित रेशे से देश में निर्मित धागे/सूत पर लागू नहीं होती, वह तो कपड़े की लागत को अधिक कर ही देती है। वैसे भी, देश के भीतर परिधानों की बिक्री पर भी शुल्क वापसी का लाभ नहीं मिल पाता। यह भी निर्यातकर्ता की सकल स्पर्धाशीलता को दुष्प्रभावित करता है।

7.15 दूसरी ओर देश की आन्तरिक कर व्यवस्था भी कपास आधारित उद्योग के पक्ष में है। जिस पर 7.5 प्रतिशत कर लगता है, जबकि मानव निर्मित रेशों से बने माल पर 8.4 प्रतिशत कर देय होता है। ऐसी ही समस्या पदत्राण उद्योग में भी विद्यमान है : चमड़े के जूतों पर 20.5 प्रतिशत और गैर चमड़ा आधारित जूतों पर 27 प्रतिशत कर लगाए जाते हैं (तालिका 5)। इस कारण से उन आन्तरिक नीतियों को तर्कशील बनाने की आवश्यकता है जो वैश्विक मांग के स्वरूप के साथ संगतिपूर्ण नहीं है।

रेखाचित्र 5 : विश्व निर्यात में सूती एवं मानव निर्मित वस्त्रों और परिधानों के अंश (प्रतिशत)

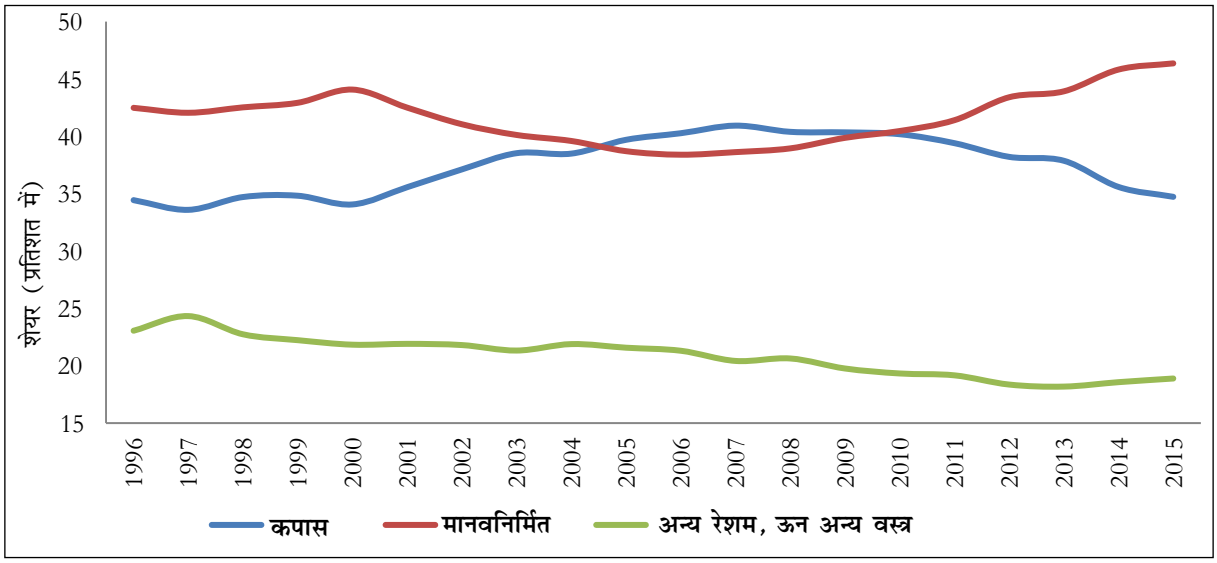

स्रोत: World Bank Database.

तालिका 5 : परिधानों और जूतों पर प्रभावी कराधान दरें (प्रतिशत)

	प्रभावी कराधान दरें (%)
कपास रेशे	7.5
मानव निर्मित रेशे	8.4
चमड़े के जूते	20.5
गैर चमड़ा आधारित जूते	27.0

स्रोत : उद्योग के अनुमान

ये अनुमान राज्यानुसार एवं पदार्थानुसार आदान-उत्पाद संबंधों में अन्तरों के कारण अलग-अलग हो सकते हैं।

7.16 विश्व भर में अब चमड़े से इतर सामग्रियों से बने जूतों की मांग में ही वृद्धि हो रही है (तालिका 6)। इस बदलाव के कई कारण संभव है : भौतिक आराम, देखने में सुन्दर और कम कीमतें। ये सब गैर चर्मजूतों के पक्ष में और चमड़े के जूतों के विरूद्ध रहते हैं। भारत चमड़े के जूतों का परंपरागत निर्यातक रहा है। विश्व बाजार में इसका चमड़े के जूतों का अंश गैर चर्म जूतों से दुगुने से अधिक (रेखाचित्र-6)। चीन से निर्यात शिथिल होने से सुलभ बाजार पर कब्जा करने के लिए भारत को गैर चर्म जूतों के निर्यात को प्रोत्साहन देना चाहिए।

तालिका 6 : चर्म एवं गैर चर्म पदत्राणों के विश्व निर्यात में अंश (प्रतिशत)

वर्ष	चमड़ा जूता	गैर चमड़ा जूता
2004	55.0	45.0
2005	55.5	44.5
2006	55.1	44.9
2007	55.0	45.0
2008	52.6	47.4
2009	50.0	50.0
2010	47.2	52.8
2011	45.6	54.4
2012	43.2	56.8
2013	43.2	56.8
2014	42.1	57.9
2015	39.5	60.5

स्रोत: **World Bank Database.**

निर्यात बाजारों में भेदभाव

7.17 कम से कम दो बड़े आयात बाजारों, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ में भारत के प्रतिस्पर्धी परिधान

रेखाचित्र 6 : भारत का चर्म एवं गैर चर्म पदत्राण निर्यात में अंश (प्रतिशत)

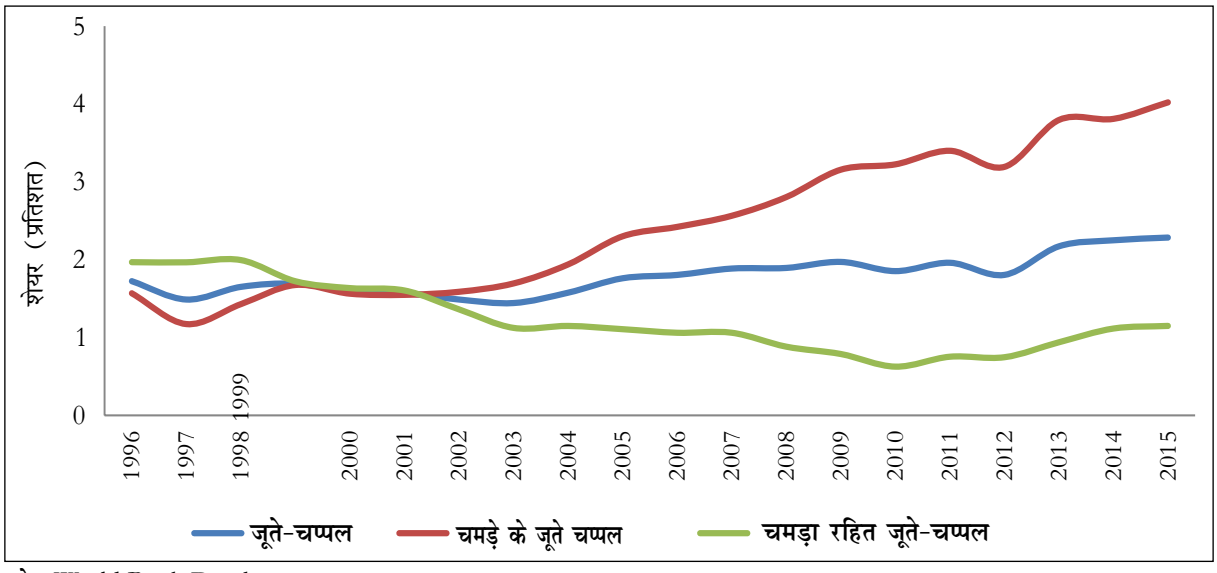

स्रोत: World Bank Database

एवं चर्म निर्यातक देशों को बेहतर बाजार तक पहुँच की सुविधा मिली है, या तो उन देशों से परिधान आयात पर शुल्क दर शून्य है या भारत की अपेक्षा निम्न है। तालिकाएं 7 और 8 भारत द्वारा अपने स्पर्धियों की तुलना में चुकानी पड़ रही शुल्क दरें दिखाई गई हैं। यूरोपीय संघ में बंगलादेश के निर्यात एक कम विकसित देश के उत्पादन के नाम पर शून्य प्राय: शुल्क के साथ प्रवेश पा जाते हैं। भारत के निर्यात पर औसतन 9.1 प्रतिशत शुल्क देय होता है। यूरोप वियतनाम मुक्त व्यापार समझौता लागू होने पर उक्त क्षेत्र में वियतनामी निर्यात भी शुल्क मुक्त प्रवेश पा जाएंगे। अमेरिका में भारत को 11.4 प्रतिशत की ऊंची दर से सीमा शुल्क देना होता है। इथोपिया, जो एक नया उभरता हुआ स्पर्धी है, अमेरिका, यूरोप और कनाडा के बाजारों में शुल्क मुक्त प्रवेश पा रहा है।

सारणी 7. भारतीय कपड़ा निर्यातकों द्वारा वहन किए जा रहे शुल्क (HS Code 61 एवं 62)

प्रतिशत

	यूरो संघ	कनाडा	सुंक्त राज्य
बंगलादेश	0	0	11.9
चीन	11.4	16.5	11.4
इथियोपिया	0	0	0
भारत	9.1	16.5	11.4
इंडोनेशिया	9.2	16.4	11.6
वियतनाम	9.2	16.2	11.6

स्रोत: World Bank Database.

7.18 भारत के चर्म एवं गैर चर्म जूतों के निर्यात पर भी व्यापार भागीदार देश उच्च दर से सीमा शुल्क लगाते हैं। जापान में तो यह एक बड़ी बाधा बन जाती है।

7.19 यूरोपीय संघ तथा ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार समझौतों का लाभ हो सकता है। परिधानों के विषय में तो बंगलादेश, वियतनाम और इथोपिया की तुलना में लाभहीनता का निवारण हो सकता है। चमड़े के पदार्थों के विषय में ये समझौते भारत की वर्तमान तुलनात्मक लाभ स्थिति को और सुदृढ़ कर सकते हैं। दोनों ही मामलों में अतिरिक्त लाभ सकारात्मक ही होगा।

(ख) क्षेत्र विशिष्ट चुनौति : चर्म एवं पदत्राण क्षेत्रक

पशुधन प्रचुरता का तुलनात्मक लाभ

7.20 चर्म एवं चर्म पदत्राण उद्योग मवेशियों, भैंसों, बकरियों, भेड़ों एवं अन्य अनेक छोट पशुओं के खाल को कच्चे माल की तरह प्रयोग करता है। अपने अधिक टिकाऊपन और अच्छी गुणवत्ता के कारण मेवशियों के चमड़े से बने सामान की विश्व बाजार में अधिक मांग है। अनुमान है कि मवेशी चर्म विश्व निर्यात भैंसों के चर्म के निर्यात से 8 से 9 गुना अधिक है। किन्तु बहुत बड़ी मवेशी जनसंख्या होने के बावजूद भारत का विश्व मवेशी संख्या तथा विश्व मवेशी चर्म निर्यात निम्न है और उसमें गिरावट भी आ रही है (रेखाचित्र 7, 8)। इसका कारण भारत में कत्ल के लिए उपलब्ध सीमित मवेशी संख्या हो सकती है। अत: एक प्रचुरता से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन से संभावित तुलनात्मक लाभ से देश वंचित रह जाता है।

तालिका 8 : भारतीय चर्म एवं पदत्राण निर्यात पर लग रहे सीमा शुल्क (प्रतिशत)

देश	यूरो संघ			जापान			संयुक्त राज्य		
	चमड़े का सामान	चमड़े के जूते	गैर चमड़े के जूते	चमड़े का सामान	चमड़े के जूते	गैर चमड़े के जूते	चमड़े का सामान	चमड़े के जूते	गैर चमड़े के जूते
बांग्लादेश	0	0	0	3.1	0	4.1	7.9	5.0	12.0
चीन	4.6	7.9	12.0	10.1	25.1	12.6	7.3	4.3	13.9
इथोपिया	0	0	0	8.8	0	-	1.0	0	0
भारत	1.0	4.4	7.5	5.7	24.3	13.3	5.5	4.7	12.2
इंडोनेशिया	1.0	4.4	7.5	1.7	25.0	10.0	5.8	5.0	13.4
वियतनाम	1.1	4.4	7.5	3.9	25.0	11.4	7.6	4.3	12.7

स्रोत: **World Bank Database**

रेखाचित्र 7 : भारतीय मवेशी संख्या का निवेश में अंश (%)

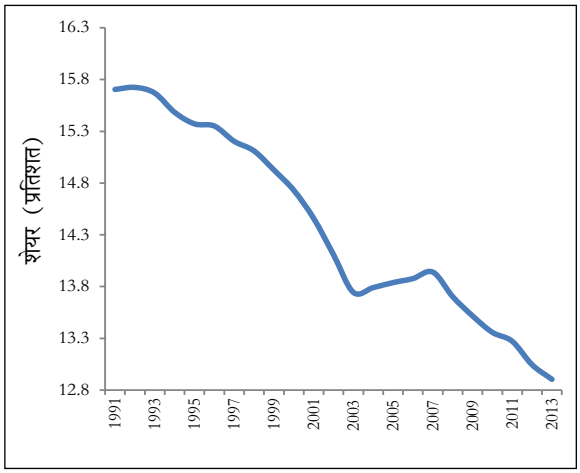

स्रोत: **FAO Statistics**

रेखाचित्र 8 : विश्व के मवेशी चर्म निर्यात में भारत का अंश (प्रतिशत)

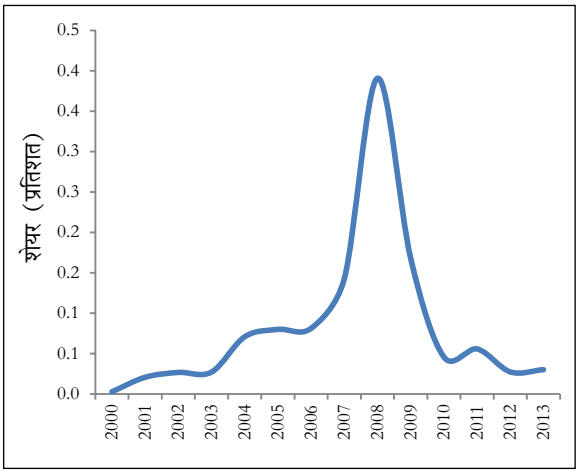

स्रोत: **FAO Statistics**

IV. नीतिगत प्रतिक्रिया और निष्कर्ष

7.21 जून 2016 में सरकार द्वारा परिधान और वस्त्र उद्योग के लिए स्वीकृत पैकेज में कई कदम सम्मिलित है। उनका तर्क आधार हमारी उल्लिखित चुनौतियों का सामना करना ही है। ये नीतियां सभी चुनौतियों का समाधान तो नहीं कर पाएंगी, फिर भी परिधान उद्योग को सुदृढ़ बनाने की दिशा में इनका बड़ा योगदान होगा। निर्यातों में निहित प्रांतीय करों के प्रभाव को निरस्त करने के लिए परिधान निर्यातकों को राहत दी जाएगी। इन करों का मान निर्यात मूल्य के 5 प्रतिशत के समान रहता है। चर्म निर्यात के लिए भी ऐसी ही व्यवस्था बहुत लाभप्रद होगी। यह सब्सिडी नहीं है, यह तो एक प्रकार की शुल्क वापसी है, यह निर्यात पर कर निवारण है और इसे WTO की व्यवस्थाओं के अनुरूप माना जाना चाहिए।

7.22 यही नहीं वस्त्र एवं परिधान निर्माता फर्मों को रोजगार बढ़ाने के लिए सब्सिडी भी जाएगी। इसका स्वरूप सरकार द्वारा नियोकता की ओर से कर्मचारी भविष्य निधि में 12 प्रतिशत का योगदान होगा। सरकार पहले ही 8.3 प्रतिशत+ का योगदान दे रही है। यह राशियां उससे अलग होंगी।

7.23 किन्तु इन कदमों के साथ कुछ और भी किया जाना चाहिए। सरकार विदेशी बाजारों में भारतीय निर्यातकों की अलाभिता की स्थिति को लेकर बहुत गंभीर है। फिर भी भारत को यूरोपीय संघ तथा ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार समझौतों के लिए सौदेबाजी में बहुत सतर्क रहना होगा। किन्तु हमारे आंकलन में परिधान और संभवत: चर्म उत्पादों के निर्यात में वृद्धि के देश में रोजगार वृद्धि पर संभावित प्रभावों को अन्य क्षेत्रों पर प्रभावों पर वरीयता मिलनी ही चाहिए। वर्ष 2016 में किए गए एक आंतरिक मूल्यांकन में अनुमान लगा है कि परिधान, चर्म और जूता उद्योग में क्रमश: प्रतिवर्ष 108029, 23156 और 14347 रोजगारों का अतिरिक्त सृजन हो सकता है (तालिका 9)। और कितने ही अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे, किन्तु उनका अनुमान लगा पाना कठिन है।

7.24 दूसरे, वस्तु एवं सेवाकर, जीएसटी, व्यवस्था का प्रारंभ आंतरिक अप्रत्यक्ष करों को तर्क संगत बनाने का एक अच्छा सुअवसर प्रदान कर रहा है, ताकि प्राकृतिक और मानव निर्मित रेशे से बने वस्त्रों के बीच भेदभाव समाप्त हो सके, साथ ही जूता उद्योग में भी चमड़े और चमड़े से इतर सामग्रियों से बने जूतों पर कराधान में अनावश्यक भेदभाव का समापन भी हो सके (यदि ऐसा हो रहा हो)।

7.25 तीसरे इन क्षेत्रों में रोजगार सृजन की बाधाएं हटाने के लिए श्रम कानूनों में कुछ सुधार करने होंगे। इनमें से कुछ हैं :

- अभी तक निम्न आय वर्ग (रू. 20,000 मासिक से कम पाने वाले) को अपने वेतन का मात्र 55 प्रतिशत मिल पाता है। 45 प्रतिशत तो अनेक प्रकार

तालिका 9 : EU/UK मुक्त व्यापार समझौते से भारत में संभावित रोजगार

	परिधान		चर्म पदार्थ		पदत्राण	
	अतिरिक्त निर्यात	रोगार वृद्धि संख्या	अतिरिक्त निर्यात	रोगार वृद्धि संख्या	अतिरिक्त निर्यात	रोगार वृद्धि संख्या
	$ mn.		$ mn.		$ mn	
यूरो क्षेत्र	1483.6	76853	416.9	18542	217	9966
ब्रिटेन	603.3	31176	103.8	4615	95.3	4381
जोड़	**2086.9**	**108029**	**520.7**	**23156**	**312.3**	**14347**

की वैधानिक कटौतियों में चला जाता है अर्थात कर्मचारी भविष्य निधि, कर्मचारी पेंशन योजना, श्रम कल्याण कोष, कर्मचारी जमा संबंधित बीमा योजना और कर्मचारी बीमा योजना आदि।

- निम्न मजदूरी कर्मचारियों की क्षमता 45 प्रतिशत बचत करने की नहीं होती, अत: वे तो इस राशि से भविष्य के संभावित लाभ पाने के इच्छुक नहीं होंगे, वे आज ही सारी आमदनी पाना चाहेंगे।
- दो सबसे बड़ी कटौतियां तो भविष्य निधि और ESI की है, इनसे कर्मचारी को अपना धन का पूरा मूल्य मिलना जरूरी नहीं होता। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन कार्यालय के पास 400 लाख खाते हैं और यह कर्मचारियों के योगदान कर 3.5 प्रतिशत तो अपनी फीस के रूप में ही वसूल कर लेता है (यह विश्व की उच्चतम फीस की दर है)। ESI भी एकत्र योगदान का मात्र 45 प्रतिशत अंश ही लाभ के रूप में उन्हें लौटाता है (भारत में शायद ही किसी निजी या सार्वजनिक स्वास्थ्य बीमा पॉलीसी में दावे का अनुपात 90 प्रतिशत से कम हो)।

7.26 रोजगार पाने के समय कर्मचारियों को इन तीन में से चयन की सुविधा मिलने पर औपचारिक रोजगार में वृद्धि हो सकती है :

- यह तय करें कि वह 12 प्रतिशत का कर्मचारी योगदान कटवाना चाहते हैं या नहीं।
- यह तय करें कि रोजगार दाता का 12 प्रतिशत अंशदान EPFO के पास जाएगा या राष्ट्रीय पेंशन योजना में।
- यह तय करें कि उनका स्वास्थ्य बीमा योगदान ESI को जाएगा या उनके किसी चुनींदा स्वास्थ्य बीमा प्रदाता को।

7.27 यह चयन कर्मचारियों को करना है, रोजगारदाता को नहीं, तथा आज की वर्तमान अवस्था को ही चुनने का विकल्प सभी कर्मचारियों को सुलभ रहेगा। मुख्य बात तो कर्मचारियों को विकल्प चुनने की सुविधा देना है। इससे EPFO और ESI जैसे सेवा प्रदाताओं को भी स्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

7.28 अत: अधिक ETAS, जीएसटी प्रेरित कर तर्क संगति और श्रम कानूनों में सुधार मिलकर वस्त्र परिधान और पदत्राण क्षेत्रों में रोजगार सृजन की संभावनाओं का बहुत संवर्धन कर सकते हैं। किसी क्षेत्र विशेष को बढ़ावा देने वाली प्रत्येक औद्योगिक नीति में कुछ जोखिमें तो होती ही हैं। किन्तु रोजगार, निर्यात और सामाजिक परिवर्तन के बाह्यता सृजक प्रभावों के कारण, परिधान और पदत्राण क्षेत्रकों में भारत की अंतर्भूत तुलनात्मक लाभ प्रदता इन जोखिमों को उठाने योग्य बना देती है। और यह भी ध्यान रहे कि कितने ही FTA, कर विवेकशीलता और श्रम कानून सुधारों के अर्थव्यवस्था व्यापी विस्तृत प्रभाव भी होंगे।

संदर्भ

1. Government of India (22nd June2016), Ministry of Textiles, PIB *"Cabinet Approves Special Package for Employment Generation and Promotion of Exports in Textiles and Apparel Sector"*

2. Government of India, *Ministry of Commerce, Council For Leather Exports Database*

3. Food and *Agriculture Organisation (FAO), Stat*

4. FAO, World Statistical Compendium forraw hides and skins, leather and leatherfootwear 1993 – 2012

5. Simon Johnson & Jonathan D Ostry & Arvind Subramanian, (2010). "Prospectsfor Sustained Growth in Africa: Benchmarking the Constraints," IMF Staff Papers, vol 57(1)

6. World Bank, World Integrated Trade Solutions

7. World Trade Organisation Database

8. World Bank (2016) "Stiches to Riches? Apparel Employment, Trade, andEconomic Development in South Asia".